Padma Vibhushan

SHRI OSAMU SUZUKI (POSTHUMOUS)

Shri Osamu Suzuki was a prominent figure, who dedicated himself to the development of the automotive industry, demonstrating exceptional leadership and initiative. He firmly believed that small cars could contribute to the motorization and industrial development of developing countries, which drove his efforts to expand Suzuki's presence globally leading. He led Suzuki Motor Corporation, a global manufacturer of motorcycles and automobiles, as Chairman and CEO from 1978 until 2021. He also played a significant role in India, serving as a Director and honorary Chairman of Maruti Suzuki from May 1983 until his passing in December 2024.

2. Born on 30th January, 1930 in Gifu Prefecture, Japan, Shri Osamu Suzuki graduated from Chuo University with a degree in law and began his career in the banking sector. In 1958, he joined Suzuki, where he made notable achievements in the construction of a new factory and procurement processes. By 1963, he had become a Director, taking charge of both domestic and international sales divisions. His leadership culminated in 1978 when he was appointed President and CEO of Suzuki. The launch of the compact car "Alto" in Japan in 1979 marked a significant milestone, becoming a bestseller and a major driving force behind Suzuki's growth and the advancement of motorization in Japan.

3. In March 1982, Shri Osamu Suzuki met with an Indian delegation in Japan that was tasked with selecting a partner for the state-owned automobile company, Maruti Udyog. He took the lead in conveying Suzuki's enthusiasm, which ultimately led to the signing of a joint venture agreement with the Indian government in October 1982. By December 1983, production of the Maruti 800 began. His contributions to the Indian automotive industry were extensive. The production of the Maruti 800 not only propelled motorization in India but also facilitated the growth of the automotive market to its current scale, which has become the third largest in the world. He focused on nurturing local parts manufacturers by providing guidance and investment to Indian partners, bridging collaborations with Japanese parts manufacturers, and establishing a robust supplier network.

4. Shri Osamu Suzuki introduced Japanese working culture in India, promoting practices such as Japanese expatriates wearing same uniforms as the ones of workers, having lunch at the same canteen, and siting in common office space instead of private offices for management. He also facilitated the dispatch of Indian workers and managers to Japan for hands-on training, produced and consistently screened educational films highlighting Japanese work culture to help local employees cultivate a shift in mindset. Through his leadership and collaboration with Indian stakeholders, he helped create over one million jobs in India across Maruti Suzuki, parts manufacturers, sales/service outlets, and transportation companies. Their exports now reach over 100 countries, making them a leading player in the Indian automotive sector and significantly contributing to foreign currency earnings.

5. Shri Osamu Suzuki had received numerous awards from Japan, India, Hungary, and Pakistan, including Sitara-i-Imtiaz Award, Pakistan in 1985; Medal with Blue Ribbon, Japan in 1987; Commander's Cross of the Hungarian Order of Merit in 1993; Order of the Rising Sun, Gold and Silver Star, Japan in 2000, Induction into the Japanese Automotive Hall of Fame in 2002; Commander's Cross with the Star of the Hungarian Order of Merit in 2004; Padma Bhushan by the Government of India in 2007; Grand Cross of the Hungarian Order of Merit in 2020 and Fourts Grade, Senior of the Court Rank in 2024.

6. Shri Osamu Suzuki passed away on 25th December, 2024.

पद्म विभूषण

श्री ओसामु सुज़ुकी (मरणोपरांत)

श्री ओसामु सुजुकी एक विख्यात शख्सियत थे, जिन्होंने असाधारण नेतृत्व और पहल का प्रदर्शन करते हुए ऑटोमोटिव उद्योग के विकास के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनका दृढ़ विश्वास था कि छोटी कारें विकासशील देशों के मोटरीकरण और औद्योगिक विकास में योगदान दे सकती हैं, जिसने सुजुकी मोटर को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने के उनके प्रयासों को प्रेरित किया। उन्होंने 1978 से 2021 तक मोटरसाइकिल और ऑटोमोबाइल के वैश्विक विनिर्माता सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष और सीईओ के रूप में नेतृत्व किया। उन्होंने भारत में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, मई 1983 से दिसंबर 2024 में अपने निधन तक मारुति सुजुकी के निदेशक और मानद अध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

2. 30 जनवरी, 1930 को जापान के गिफू प्रान्त में जन्मे श्री ओसामु सुजुकी ने चुओ विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री प्राप्त की और बैंकिंग क्षेत्र में अपना करियर शुरू किया। 1958 में, वे सुजुकी में शामिल हो गए, जहां उन्होंने एक नए कारखाने के निर्माण और खरीद प्रक्रियाओं में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं। 1963 तक, वह निदेशक बन गए, और घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय बिक्री प्रभागों का प्रभार उनके पास था। उनका नेतृत्व 1978 में चरम पर पहुंच गया जब उन्हें सुजुकी का अध्यक्ष और सीईओ नियुक्त किया गया। 1979 में जापान में कॉम्पैक्ट कार "ऑल्टो" की लाचिंग एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ, जो एक बेस्टसेलर बन गई और सुजुकी के विकास और जापान में मोटरीकरण की प्रगति के पीछे एक प्रमुख प्रेरक शक्ति बन गई।

3. मार्च 1982 में, श्री ओसामु सुजुकी जापान में एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल से मिले, जिसे सरकारी स्वामित्व वाली ऑटोमोबाइल कंपनी मारुति उद्योग के लिए एक भागीदार चुनने का काम सौंपा गया था। उन्होंने सुजुकी का उत्साह व्यक्त करने में अग्रणी भूमिका निभाई, जिसके कारण अंततः अक्टूबर 1982 में भारत सरकार के साथ एक संयुक्त उद्यम समझौते पर हस्ताक्षर हुए। दिसंबर 1983 तक, मारुति 800 का उत्पादन शुरू हो गया। भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग में उनका योगदान व्यापक था। मारुति 800 के उत्पादन ने न केवल भारत में मोटरीकरण को बढ़ावा दिया, बल्कि ऑटोमोटिव बाजार के विकास को भी अपने मौजूदा स्तर तक पहुंचाया, जो दुनिया में तीसरे नंबर पर है। उन्होंने भारतीय भागीदारों को मार्गदर्शन और निवेश प्रदान करते हुए, जापानी कलपुर्जे विनिर्माताओं के सहयोग से और एक मजबूत सप्लायर नेटवर्क स्थापित करते हुए स्थानीय कलपुर्जे विनिर्माताओं के विकास करने पर ध्यान केंद्रित किया।

4. श्री ओसामु सुजुकी ने जापानी प्रवासियों द्वारा कर्मचारियों के समान वर्दी पहनने, एक ही कैंटीन में दोपहर का भोजन करने और प्रबंधन के लिए निजी कार्यालयों के बजाय एक ही कार्यालय में बैठने जैसी प्रथाओं को बढ़ावा देते हुए भारत में जापानी कार्य संस्कृति की शुरुआत की। उन्होंने भारतीय कर्मचारियों और प्रबंधकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए जापान भेजने में भी मदद की, स्थानीय कर्मचारियों की मानसिकता में बदलाव लाने के लिए जापानी कार्य संस्कृति को दर्शाने वाली शैक्षिक फिल्मों का निर्माण किया और लगातार उनका प्रदर्शन किया। अपने नेतृत्व और भारतीय हितधारकों के साथ सहयोग के जरिये, उन्होंने भारत में मारुति सुजुकी, कलपुर्जे विनिर्माताओं, बिक्री/सेवा आउटलेट और परिवहन कंपनियों में दस लाख से अधिक नौकरियों के सृजन में मदद की। उनका निर्यात अब 100 से अधिक देशों के साथ होता है, जिससे वे भारतीय ऑटोमोटिव क्षेत्र में एक अग्रणी उद्यमी बन गए हैं और विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

5. श्री ओसामु सुजुकी को जापान, भारत, हंगरी और पाकिस्तान से कई पुरस्कार मिले थे, जिनमें 1985 में पाकिस्तान का सितारा–ए–इम्तियाज पुरस्कार; 1987 में जापान में ब्लू रिबन के साथ पदक; 1993 में हंगरी ऑर्डर ऑफ मेरिट का कमांडर क्रॉस; 2000 में जापान का ऑर्डर ऑफ द राइजिंग सन, गोल्ड एंड सिल्वर स्टार, 2002 में जापानी ऑटोमोटिव हॉल ऑफ फेम में शामिल होना; 2004 में हंगरी ऑर्डर ऑफ मेरिट के स्टार के साथ कमांडर क्रॉस; 2007 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण; 2020 में हंगरी ऑर्डर ऑफ मेरिट का ग्रैंड क्रॉस और 2024 में फोर्ट्स ग्रेड, सीनियर ऑफ द कोर्ट रैंक शामिल हैं।

6. 25 दिसंबर, 2024 को श्री ओसामु सुजुकी का निधन हो गया।